उपसंहार

उपसंहार

श्री भगवतीचरण वर्मा हिंदी साहित्य के वरिष्ठ लेखक और कवि माने जाते हैं। वे स्वभाव से विद्रोही हैं। वे न धर्म पर आस्था रखते, न उपासना में श्रद्धा रखते हैं। साहित्य के बारे में आस्था, रुचि बचपन से ही रही है।

वर्माजी हिंदी साहित्य में कवि, कथाकार, नाटककार, उपन्यासकार, संपादक और फिल्मी सीनेरिया-लेखक आदि विविध रूपों में प्रख्यात हुए हैं, इसी लिए उन्हें चहुँमुखी प्रतिमा के धनी कहा जाता है। उनके व्यक्तित्व में जो कुछ है, वह अत्यंत सहज और सरल है। उनमें प्रदर्शन की प्रवृत्ति-बिलकुल ही नहीं है। उन्होंने अपने साहित्य में आधुनिक जीवन की विषम परिस्थितियों में स्वतंत्र लेखक का व्रत लिया और आत्मसम्मान तथा निष्ठा से उसका निर्वाह किया। उनका सारा जीवन निरंतर संघर्ष के बीच से गुजरा है। जीवन का यही संघर्ष उनकी स्थिति है, शक्ति है। वे मानव-मन की गहराई में जाकर परिस्थिति समझकर रचना करनेवालों में से हैं।

वर्माजी ने कविता संग्रह के साथ कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंधों की रचना की है। साथ ही संपादक का भी काम कुशलतापूर्वक किया है। वर्माजी का पूरा जीवन विषम परिस्थितियों में संघर्षरत रहते हुए भी सृजनशील रहा। उनकी रचनाओं में कुलमिलाकर 6 काव्य संग्रह हैं। अब तक उनके तेरह उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं, और अभी भी वे सृजनरत हैं। अबतक 3 कहानी संग्रह, 2 नाटक, 2 निबंध संग्रह, कुछ एकांकी, एक चित्रालेख आदि साहित्य प्रकाशित हुआ है। उनके व्यक्तिमत्व में सच्ची लगन, दृढ़ विश्वास होने के कारण ही साहित्य क्षेत्र में आगे-आगे बढ़ते रहे हैं।

जीवन के विविध रूपों को उन्होंने अपनी कहानियों का विषय बनाया है। इनकी कहानियाँ चरित्र प्रधान हैं, जो रेखाचित्र के समीप हैं। कुछ कहानियाँ बौद्धिक विचारों और समस्याओं को लेकर लिखी गई हैं। इनकी कहानियों में अनेक समस्याओं को उजागर किया है। उनकी कहानियों में आधुनिक सभ्यता की अर्थलिप्सा का चित्रण किया गया है। वे जीवन मूल्यों के प्रश्नों को बड़े तीखे रूपों में दिखाते हैं। आर्थिक समस्या को दिखानेवाली कहानियाँ भी हैं। उन्होंने नाटक, निबंधों में समाज की विविध-समस्याओं पर गहरा विचार किया है।

वर्माजी ने उपन्यासों में सामाजिक जीवन में आनेवाली विविध समस्याओं का चित्रण किया है। उसके साथ तत्कालीन समाज में नारी एवं विधवा का स्थान कैसा है? उसे अच्छी तरह प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में व्यंग्य की मात्रा भी बड़ी पैनी मिलती है। उन्होंने आजतक अनेक उपन्यास लिखे हैं, जिनमें से अबतक तेरह उपन्यास प्रकाशित हो गए हैं।

वर्माजी ने उपन्यासों की शुरूआत 'पतन' उपन्यास से की है। यह उपन्यास सन 1928 में प्रकाशित हुआ। उसके बाद उन्होंने 1934 में दूसरा उपन्यास लिखा जिसका नाम है 'चित्रलेखा'। इसी उपन्यास की वजह से वर्माजी को बहुत बड़ी लोकप्रियता मिली। साथ ही हिंदी साहित्य क्षेत्र में उनकी अपनी एक अलग पहचान बनी। यह दार्शनिक उपन्यास है। यह उपन्यास एक सामाजिक समस्या को लेकर तैयार किया है। इसकी पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है। यह सब होते हुए भी, यह उपन्यास पूरी तरह समस्याप्रधान उपन्यास है। पाप और पुण्य के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए उपन्यास की रचना हुई है। इस उपन्यास का वातावरण, स्थान भले ही ऐतिहासिक है मगर इसमें पात्रों की निर्मिति पूर्णतः काल्पनिक है। वर्माजी लिखित 'चित्रलेखा' उपन्यास का परिवेश प्राचीन कालीन

स्थिति को लेकर प्रस्तुत हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने इसमें ऐतिहासिक पक्ष, सामाजिक पक्ष, दार्शनिक पक्ष आदि सभी प्रकारों का चित्रण बहुत ही यथार्थ रूप में किया है।

वर्माजी का 'चित्रलेखा' एक समस्या प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास की कथावस्तु की शुरूआत एक सामाजिक प्रश्न से होती है। वर्माजी ने 'चित्रलेखा' में पाप और पुण्य के बारे में अपने मत स्पष्ट किए हैं। वे कहते हैं कि पाप और पुण्य की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है, क्योंकि इस संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। इसी तथ्य को वर्माजी ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है। इसमें प्राचीन कालीन जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया है। साथ ही इसमें अनेक सामाजिक समस्याओं का चित्रण भी किया है। प्राचीन काल में नारी तथा विधवा की समस्याएँ कैसी थी? सामंत लोगों का रहन-सहन कैसा था? प्राचीन कालीन गुरुकुल पद्धति कैसी थी? राजदरबारों में तत्काल में यौगिक चमत्कारों का बोलबाला किस तरह था? उसी प्रकार बड़े लोगों में, ज्ञानी लोगों में किस प्रकार तार्किक विवाद होते रहते थे? इन सभी प्रसंगों का चित्रण वर्माजी ने बड़ी यथार्थता के साथ किया है।

वर्माजी ने प्राचीन काल होते हुए भी उपन्यास की नायिका नर्तकी चित्रलेखा को एक प्रगतिवादी, चंचल नारी के रूप में उजागर किया है। प्राचीन काल में नारियों पर किस प्रकार बंधन थे, फिर भी नर्तकी चित्रलेखा सभी बंधनों को तोडती हुई आगे कैसे जाती है? इसीका बहुत सहज एवं सफल चित्रण वर्माजी ने किया है। उसी प्रकार वर्गभेद और आर्थिक समस्या पर भी यथेष्ट प्रकाश डाला है। वर्माजी ने इन सभी प्रसंगों को आधिकारिक और प्रासंगिक कथानक की सहायता से बहुत प्रभावोत्पादकता से संजोया है। कथावस्तु में आधिकारिक कथावस्तु को विकसित करने में प्रासंगिक कथावस्तु का उचित सहयोग मिला है। अतः उपन्यास अधिक निखरा है। वर्माजी ने कथावस्तु में सुसंबद्धता, सरलता, मौलिकता, निर्माण कौशल, सत्यता, रोचकता, आकर्षकता तथा नाटकीयता का उचित निर्वाह करने की कोशिश की है। कथावस्तु का आधार मानव जीवन की समस्याओं का उद्घाटन करना है।

उपन्यास में प्रमुख पात्रों के रूप में तीन ही पात्र प्रधान हैं। इनके बारे में कथा छोड़कर बीच में ही काशी यात्रा या हिमालय यात्रा का वर्णन आया है, जो कथा को छोड़कर आया है। अतः कथानक में कुछ शिथिलता जरूर आई है। फिर भी लेखक ने अपनी कुशलता से उसमें संघटन कुशलता दिखाई है। सामाजिक समस्याओं को उठाने से मानव जीवन के विविध स्तरों का कुशलता से चित्रण हुआ है। इस तरह साधारण कथावस्तु को उन्होंने अपनी उर्वरित प्रतिभा से असाधारण तथा महत्त्वपूर्ण बनाया है।

'चित्रलेखा' उपन्यास की कथावस्तु में एक आधिकारिक कथा है और अन्य अनेक प्रासंगिक कथाएँ हैं। उसी प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में चित्रलेखा, बीजगुप्त तथा कुमारगिरि की कथा आधिकारिक है। यशोधरा, श्वेतांक, मृत्युंजय की कथाएँ प्रासंगिक हैं। वर्माजी 'चित्रलेखा' उपन्यास के प्रारंभ में परिस्थितियों का यथार्थ परिचय देकर मूल संघर्ष की ओर मुडे हैं। उपन्यास के मध्यभाग में यशोधरा की प्रासंगिक कथा द्वारा कथानक में विस्तार होता है। अंत में कथा का चरमोत्कर्ष दिखाया है, जो बहुत ही तीव्र एवं मर्मस्पर्शी है। इस उपन्यास में एक वर्ष की संक्षिप्त कथा है। उपन्यास का प्रारंभ अत्यंत नाटकीय ढंग से हुआ है। जब श्वेतांक ने पूछा - 'और पाप?' इस प्रश्न से कथा शुरू होती है। महाप्रभु रत्नांबर के उत्तर द्वारा कुशल वर्माजी ने प्रारंभ में ही

उपन्यास की मूल समस्या की ओर संकेत करते हुए लिखा है - 'हाँ, पाप की परिभाषा करने की मैंने कई बार चेष्टा की है, पर सदा असफल रहा हूँ। पाप क्या है, और उसका निवास कहाँ है, यह एक बड़ी कठिन समस्या है, जिसको मैं आज तक नहीं सुलझा सका हूँ।' [1] महाप्रभु के इस वाक्य से लेखक स्पष्ट करना चाहते हैं कि पाप की कोई परिभाषा नहीं दी जा सकती है, उसे केवल अनुभव द्वारा ही जाना जा सकता है। इस प्रसंग से हमें प्राचीन कालीन गुरुकुल का बोध भी होता है।

'चित्रलेखा' उपन्यास में वर्माजी ने ऐतिहासिक परिवेश की निर्मिति की है। इसमें प्राचीन कालीन भारत वर्ष का राजा सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल का वर्णन है। उपन्यास की प्रमुख नायिका चित्रलेखा, सम्राट चंद्रगुप्त राजा के राजदरबार की राजनर्तकी है। अन्य पात्र बीजगुप्त भी पाटलिपुत्र नगर के सामंत हैं। सारी कथा का सूत्रपात इसी पाटलिपुत्र नगर से हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वर्माजी इस उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यास के रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। मगर सूक्ष्म अध्ययन करने से पता चलता है कि यह उपन्यास ऐतिहासिक नहीं है, क्योंकि इसमें ऐतिहासिक पात्रों की कमी है। दो ही पात्र ऐतिहासिक है - सम्राट चंद्रगुप्त और महामंत्री चाणक्य। मगर उनका सिर्फ वर्णन आया है। उन्हें इस उपन्यास में कोई महत्त्व नहीं है। अतः ऐतिहासिकता का आभास मात्र लगता है। क्योंकि इतिहास का अर्थ है तत्कालीन घटनाओं का यथार्थ वर्णन करना जिसका यहाँ पूर्णतः अभाव है।

वर्माजी ने इस उपन्यास में तीन प्रमुख पात्र चित्रलेखा, बीजगुप्त और कुमारगिरि को ऐसे पात्रों के रूप में चित्रित किया है जो ऐतिहासिक नहीं बल्कि काल्पनिक है। उनका इतिहास या प्राचीन काल से कोई संबंध नहीं है। संस्कृत नाटक 'मुद्राराक्षस' में महामंत्री चाणक्य को बड़ा ही महत्त्व है, जो इतिहास कालीन है। उसमें उनके कूटनीति के चर्चे हैं। मगर इस उपन्यास में उसका चित्रण कहीं नहीं नजर आता। ऐतिहासिक वर्णन सिर्फ दो या तीन प्रसंगों में आया है। जैसे, चंद्रगुप्त मौर्य के राजदरबार का वर्णन। उसी दरबार में योगी कुमारगिरि का चमत्कारों का दर्शन कराना। ईश्वर और सत्य के बारे में उसे इसी दरबार में चमत्कार करते हुए दिखाया है। इसी प्रकार इसी दरबार में ज्ञानी लोगों में तार्किक-वाद-विवाद किस तरह चलते हैं, इसका भी यथार्थ चित्रण हुआ है। उपन्यास के अंत में एक प्रसंग में श्वेतांक के विवाह हेतु प्रीतिभोज के समय सम्राट चंद्रगुप्त और चाणक्य को आमंत्रित किया जाता है। पाटलिपुत्र, राजदरबार, राजमार्ग, हिमालय जैसे शब्द भी प्राचीनता का बोध कराते हैं। इतिहास का अर्थ है - तत्कालीन घटनाओंका यथार्थ वर्णन। प्रस्तुत उपन्यास में ऐतिहासिक घटनाओं के वर्णन बहुत कम दिखाई देते हैं।

वर्माजी ने इस उपन्यास के शुरू में और अंत में ही इतिहास का संबंध दर्शाया है। बीजगुप्त, चित्रलेखा और कुमारगिरि इनकी कथाएँ तथा बीच में यशोधरा, श्वेतांक, मृत्युंजय की प्रासंगिक कथाएँ आई हैं, जो इतिहासकालीन नहीं है क्योंकि सभी पात्र काल्पनिक मात्र हैं। 'चित्रलेखा' उपन्यास में हमें इतिहास किसी रूप में नजर नहीं आता। दो-तीन प्रसंगों को छोड़कर सारे प्रसंग - घटनाएँ काल्पनिक लगती हैं। इस उपन्यास में दार्शनिकता का चित्रण अनेक प्रसंगों में दिखाई देता है। चित्रलेखा का कथानक अतीत के युग-विशेष से बँधा होने पर भी ऐतिहासिक उपन्यास के लिए यथेष्ट वातावरण का सर्जन नहीं करता। उसमें युगोचित, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों की भूमि स्थापित नहीं हुई है। ऐतिहासिक उपन्यासों में बहुधा जीवन संबंधी समस्याएँ विशिष्ट युग की होती है, जिसका यहाँ पूर्णतः अभाव है।

ऐतिहासिक तत्त्व को लेखक ने प्रधान नहीं माना है। अतः 'चित्रलेखा' उपन्यास ऐतिहासिक नहीं है। इतिहास का आभासमात्र है। यहाँ गहन दृष्टिकोण की दृष्टि से देखा जाए तो ऐतिहासिकता से अधिक यह उपन्यास दार्शनिक ही अधिक लगता है। उसके साथ सांस्कृतिकता भी है। वर्माजी को दो पात्रों की सहायता से चंद्रगुप्त मौर्य के शासन काल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की निर्मिति करने में अच्छी तरह सफलता मिली है।

वर्माजी ने अनेक प्रसंगों में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ वर्णन करने की कोशिश की है और उसमें वे सफल भी हुए हैं। वर्माजी की दृष्टि से समाज मनुष्य की समष्टि का दूसरा नाम है। व्यक्ति या मनुष्य से ही समाज की निर्मिति की जाती है।

वर्माजी ने उपन्यास में पाप-पुण्य किसे कहते हैं? उसका स्थान कहाँ पर है? इसी सामाजिक समस्या को बड़ी कुशलता से स्पष्ट किया है। इसमें पाप-पुण्य की समस्या से जुड़े अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्न भी हैं, जो इस उपन्यास में बार-बार उठाए गए हैं। जैसे विवाह, धर्म, प्रेम, ईश्वर, व्यक्ति, परिस्थिति आदि। संदर्भों को जगह-जगह अनेक ज्वलंत प्रश्न हैं जो हमारे समाज से संबंधित हैं। वर्माजी ने वर्तमानकालीन सामाजिक प्रश्नों की खोज के लिए अतीत का सहारा लिया है। भगवतीचरण वर्मा लिखित 'चित्रलेखा' उपन्यास की निर्मिति वर्तमानकालीन सामाजिक प्रश्नों की खोज के लिए अतीत का सहारा लेकर समाधान करने की चेष्टा है।

सन 1934 में समाज की स्थिति कुछ इस प्रकार की थी। रूढ़ि-परंपरा, रीति-रिवाज, तथा धर्म के नाम पर अनेक बुराइयाँ समाज में घर कर गई थीं। शताब्दियों से समाज में नारी उपेक्षित रही है। वह पिता-पति तथा पुत्र के संरक्षण में पलती रही। समाज में कट्टर वर्ण व्यवस्था थी। ऐसे समाज का यथार्थ चित्रण एक प्रगतिवादी उपन्यास की दृष्टि से किया है। जैसे, एक प्रसंग में मृत्युंजय के यहाँ भोज में बीजगुप्त के साथ नर्तकी को भी बुलाया जाता है। मगर नर्तकी का आगमन वहाँ उपस्थित कुलीन नारियों को अच्छा नहीं लगा। इससे पता चलता है कि उस समय इसी प्रकार की नर्तकियों को उच्च कुलीन समाज में कोई स्थान नहीं मिलता था। राजनर्तकी यह किसी एक व्यक्ति की नहीं होती, तो वह सब का दिल बहलानेवाली राजनर्तकी होती है। उसपर किसी एक व्यक्ति का अधिकार नहीं होता है। इसप्रकार वर्माजी ने सामाजिक वर्णन प्रसंगानुरूप घटनारूप किया है। तत्कालीन सामाजिक वर्णन यथार्थ रूप में करने में वर्माजी सफल हुए हैं।

उपन्यास का वातावरण ऐतिहासिक लगता है। कहीं-कहीं पर बौद्धकालीन सामाजिक स्थिति पर प्रकाश अवश्य डाला है, पर इसमें बौद्धकालीन वेशभूषा, खान-पान, आचार-विचार आदि बातों पर यथार्थ प्रकाश नहीं डाला गया है। वर्माजी ने इस उपन्यास को केवल सामाजिक समस्यात्मक उपन्यास माना है। उनके मतानुसार पाप और पुण्य के बारे में सच्चाई को समाज में ही ढूँढा जा सकता है। अपने कथन की पुष्टि के लिए वर्माजी ने काल्पनिक पात्रों की निर्मिति की है। उन्हीं की सहायता से उपन्यास में सामाजिक समस्या को उठाया है, जिसमें उन्हें अच्छी सफलता मिली है।

वर्माजी लिखित 'चित्रलेखा' को एक समस्या प्रधान उपन्यास माना जा सकता है। सच तो यह है कि पूरे उपन्यास की पृष्ठभूमि दार्शनिक बन गई है। वर्माजी के मतानुसार जो बात अध्ययन से समझ में नहीं आती है, उसके लिए उसका केवल अनुभव ही किया जा सकता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महत्त्व के विचार से

अनुभव ही कीमती है - कोरा ज्ञान नहीं। 'चित्रलेखा' में हमें जो जीवन की झाँकी मिली है, उसमें अनुभव ही प्रधान है। उसमें वर्णित सत्यासत्य का निरूपण ठोस अनुभव के आधार पर हुआ है।

'चित्रलेखा' उपन्यास का प्रमुख पात्र पाटलिपुत्र की राजनर्तकी चित्रलेखा है। वह स्वयं दार्शनिक है। वह एक नर्तकी होकर भी तार्किक वाद-विवाद करती है। उसके कथनों में हमें दार्शनिकता का बोध होता है। उसका पूरा जीवन अनेक समस्याओं से भरा हुआ दिखाई देता है। पाप-पुण्य के तराजू की असलियत क्या है? प्रेम क्या है? प्रेम की पूर्ण स्थिति तक पहुँचने में कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं? जीवन के लिए बताए गए मार्गों में जो आदर्श हैं, उनमें कौन श्रेष्ठ है? ये सब दार्शनिक प्रश्न हैं और इन्हीं सब प्रश्नों पर 'चित्रलेखा' में वर्माजी ने प्रकाश डाला है। लेखक स्वयं ही एक दार्शनिक हैं। पर पाठकों को वे अपने विचार स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं करते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि 'चित्रलेखा' उपन्यास दार्शनिक पृष्ठभूमि के आधार पर लिखा उपन्यास है।

'चित्रलेखा' उपन्यास में वर्माजी ने जिन तीन पात्रों की निर्मिति की है उन तीनों की अलग-अलग दार्शनिक विशेषता विद्‌यमान है। चित्रलेखा को वर्माजी ने प्रवृत्तिमार्गी दिखाया है। वह पूर्ण रूप से प्रवृत्तिमार्ग का ही प्रतिनिधित्व करती है। यह प्रवृत्तिमार्ग मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति से पैदा हुआ है। चित्रलेखा कल की चिंता नहीं करती, कल क्या होगा इसके लिए वह आज को, वर्तमान को बरबाद नहीं करना चाहती। वह वर्तमान में मस्त रहती है और अतीत के बारे में सोचती तक नहीं। जीवन का क्या अंत होगा? इससे वह कभी चिंतित नहीं होती। वह जीवन का सुख मस्ती में मानती है।

वर्माजी ने कुमारगिरि को दार्शनिकता का दूसरा अंग निवृत्ति मार्गी दिखाया है। निवृत्ति मार्ग अर्थात आकर्षणों और तृष्णाओं पर विजय पाना। वर्माजी ने कुमारगिरि के माध्यम से इसी निवृत्ति मार्ग का चित्रांकन किया है। लेकिन हमारे मन में ऐसा प्रश्न खड़ा रहता है कि क्या उसकी यह विजय असली विजय है? निवृत्ति मार्ग स्वयं जो कुछ देखता है, जो सुनता है और जिसका अनुभव करता है, वही उसका संसार रहता है। 'चित्रलेखा' में वर्माजी ने कुमारगिरि के माध्यम से इसी निवृत्तिमार्ग का यथार्थ वर्णन किया है।

वर्माजी बीजगुप्त के माध्यम से वास्तविक योग को जीवन का सच्चा मार्ग मानते हैं। सच्चा योगी वही है, जिसकी आत्मा निर्विकार है। जिसके लिए प्रत्येक वस्तु समान है, और जिसने निर्लिप्त रह कर इंद्रियों पर विजय प्राप्त की है। इंद्रियजित वही है, जो इंद्रियों का समुचित उपयोग करता है - देखता है, सुनता है, सूँघता है और स्वाद भी लेता है। किंतु इतना सब करते समय वह विषयानंदों में लिप्त नहीं होता। बीजगुप्त नियति पर विश्वास रखता है। उसके जीवन में चित्रलेखा उसकी इच्छा से आई मगर बाद में उसके जीवन को भार बनाती है। जिस बात की बीजगुप्त ने कल्पना तक न की थी, वही हो गई। यशोधरा भी उसके जीवन में बिना उसकी इच्छा से आ गई थी। इसे विधि का विधान मान कर वह सोचता कि 'संभवतः चित्रलेखा मेरे जीवन से इसीलिए चली गई है - विवाह करूँ - एक बार गृहस्थी का अनुभव करूँ।' [2] अतः उसी रात को वह यशोधरा से विवाह करने का निश्चय कर लेता है, किंतु ऐसा भला क्यों हो पाता? होनी श्वेतांक को माध्यम बनाकर उसकी इच्छापूर्ति में बाधा उपस्थित कर देती है। इसके बावजूद यशोधरा से विवाह करने का दृढ़-निश्चय उसे मृत्युंजय के द्‌वार तक ले जाता है। 'मेरे निर्णय में बाधा डालने वाला कोई नहीं है। मैंने निश्चय कर लिया है कि यशोधरा

से विवाह करूँगा, और उस निश्चय को बदलना असंभव है' [3] किंतु भाग्य उसे दूसरा ही मोड़ देता है। हाय रे भाग्य कहकर वह खुद ही श्वेतांक का नाम प्रस्तापित कर देता है।

बीजगुप्त नियति के बारे में कहता है, कि 'एक अज्ञात शक्ति प्रत्येक व्यक्ति को चलाती है - मनुष्य की इच्छा का कोई मूल्य नहीं है। मनुष्य स्वावलंबी नहीं है, वह कर्ता नहीं है, साधन मात्र है।' [4] उसका विश्वास है कि हमारे प्रत्येक कार्य में अदृश्य का हाथ है, उसकी इच्छा ही सबकुछ है। [5] बीजगुप्त का यह अतिशय नियतिवादी दृष्टिकोण उसके चरित्र को दुर्बल बनाता है। एक-दो स्थानों पर वह श्वेतांक को जब कहता है कि मनुष्य परिस्थिति का दास है, पर परिस्थिति पर विजय पाने की उसे कोशिश करनी चाहिए, तब अच्छा लगता है। एक और स्थान पर वह श्वेतांक से कहता है कि मनुष्य परिस्थितियों का दास अवश्य है, पर परिस्थिति के सामने हथियार नहीं डालना चाहिए।

वर्माजी नियतिवाद में प्रगाढ़ आस्था रखते हैं। उन्होंने चित्रलेखा में भी परिस्थितियों को अटल बताते हुए बीजगुप्त के द्वारा कहा है कि मनुष्य स्वतंत्र विचार वाला प्राणी होते हुए भी परिस्थितियों का दास है। रत्नांबर भी कहते हैं - 'जो कुछ मनुष्य करता है, वह उसके स्वभाव के अनुकुल होता है और स्वभाव प्राकृतिक होता है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है - विवश है। वह कर्ता नहीं है, वह केवल साधन है। फिर पाप और पुण्य कैसा?' [6] आगे रत्नांबर कहते हैं - 'संसार में इसीलिए पाप की एक परिभाषा नहीं हो सकी और न हो सकती है। हम न पाप करते हैं और न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते हैं, जो हमें करना पड़ता है।' [7]

इसी प्रकार इस उपन्यास का मुख्य पात्र नियतिवादी के रूप में चित्रित किया है। उपन्यास के प्रारंभ में वर्णित भोगी बीजगुप्त अंत में एक आदर्शवादी महान योगी बन जाता है, और प्रारंभ में वर्णित योगी कुमारगिरि इंद्रियजित होकर भी वासना के कारण अंत में पापी, घृणित बन जाता है।

वर्माजी ने उपन्यास के अंत में नियति के चक्र में पाप और पुण्य के बारे में स्पष्ट चित्रण किया है। इसी से स्पष्ट है कि वर्माजी नियतिवादी रहे हैं। वे उपन्यास के अंत में अपना मत प्रकट करते हैं। उनके मतानुसार मनुष्य कुछ करता नहीं, वह परिस्थितियों का दास है, नियति का दास है।

इस प्रकार वर्माजी ने दार्शनिक पृष्ठभूमि के आधार पर उपन्यास की निर्मिति की है। संक्षेप 'चित्रलेखा' उपन्यास में दार्शनिकता का चित्रण करने में वर्माजी को अच्छी सफलता मिली है।

'चित्रलेखा' उपन्यास का सूक्ष्म अध्ययन करने पर, उसकी कथावस्तु का अनुशीलन तथा ऐतिहासिक, सामाजिक और दार्शनिक पक्षों की समीक्षा करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि भगवतीचरण वर्मा लिखित 'चित्रलेखा' सचमुच एक सफल उपन्यास है। उसकी सफलता एवं लोकप्रियता को स्वीकार करना ही पड़ता है। आधुनिक उपन्यास साहित्य में निस्संदेह ही 'चित्रलेखा' उपन्यास ने अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है, और साथ-साथ भगवतीचरण वर्मा भी अपने एक विशिष्ट स्थान के अधिकारी बने हैं।

	संदर्भ		पृष्ठ
1.	चित्रलेखा	भगवतीचरण वर्मा	5
2.	चित्रलेखा	भगवतीचरण वर्मा	145
3.	चित्रलेखा	भगवतीचरण वर्मा	164
4.	चित्रलेखा	भगवतीचरण वर्मा	145
5.	चित्रलेखा	भगवतीचरण वर्मा	99
6.	चित्रलेखा	भगवतीचरण वर्मा	177
7.	चित्रलेखा	भगवतीचरण वर्मा	177